

रक्तदान मानवता और विश्व बंधुत्व का सबसे पवित्र माध्यम-भाजपा अध्यक्ष नबीन



प्रोफ़ाटो-मुठबाम(हरिवारा)। "रक्तदान केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सेवा भाव को जगाने और विश्व बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करने का सबसे पवित्र माध्यम है।" यह बात भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने 'ओम शांति रिट्रीट सेंटर (ओआरसी)' के दादी प्रकाशमणि सभागार में ब्रह्माकुमारिज संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'रक्तदान महा अभियान' के शुभारम्भ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि कही।

युवाओं से नशा मुक्ति संकल्प से जुड़ने का आह्वान : नितिन नबीन ने कहा कि रक्तदान से व्यक्ति को आत्म-संतुष्टि मिलती है। आज इस अभियान से नई पीढ़ी का जुड़ा एक शुभ संकेत है। युवाओं को देश का भविष्य बताते हुए उन्होंने आह्वान किया कि युवा शक्ति को रक्तदान के

अभियान की प्रमुख बातें...

पूर्ण मूल्य प्राप्तिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की स्मृति में एक वर्षाभियान 21 से 28 अक्टूबर तक पूरे भारत के तट-तट रेक्टर में भी आयोजित किया गया।

वर्ष 2025 में रक्तदान के प्रकाश में रिजर्वेड 8500 यूनिट रक्तदान एकाग्र किया गया था। समाज में ब्रह्म कुं ने प्रेरणादायी चीजें साँच प्रस्तुत किया, वही कलाकारों द्वारा रक्तदान के महत्त्व पर एक प्रकाश चित्रकला प्रस्तुत किया गया।

साध-साध नशामुक्ति के संकल्प से भी जुड़ा होगा। उन्होंने ब्रह्माकुमारिज संस्थान के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ज्ञान ही जीवन को सही दिशा देता है और

कठिन परिस्थितियों में मन को शांत रखकर बड़े लक्ष्यों को पाने में एक प्रेरक स्तंभ की भूमिका निभा रहा है।

विश्वव्यापी बना भारत का योग : भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आज भारत की प्राचीन योग पद्धति सरहदों को लार्थकर पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुकी है।

रक्त के साथ 'मृत्यों का दान' भी आवश्यक - आशा दीदी : ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि रक्तदान के साथ-साथ समाज में नैतिक मृत्यों का दान करना भी उतना ही आवश्यक है। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के समाज समारोह में भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सिद्धार्थ यादव, सोहना विधायक तेजपाल तंवर, जिलाध्यक्ष अनीत सिंह सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

रक्तदान के पुनीत कार्य के लिए समाज को जागरूक करना जरूरी

राजपुर-खज. ब्रह्माकुमारिज के समाज सेवा प्रभाग द्वारा पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 19वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में पांच दिवसीय रक्तदान महाअभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत रायपुर में ब्रह्माकुमारिज के सभी सेवाकेन्द्रों में रेडक्रॉस के सहयोग से अलग-अलग शिविर लगाए गए। रक्तदान को जीवनदान बताते हुए अधिक से अधिक लोगों को इस पुनीत कार्य में

शरीर रक्तदान में दिए गए एक यूनिट रक्त की भरपायी अगले चौबीस घण्टे में ही कर लेता है। उन्होंने लोगों से रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने और अपने आसपास के लोगों को भी इस पुनीत कार्य के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। ब्रह्माकुमारिज रायपुर सेवाकेन्द्रों की संचालिका एवं प्रशासिका सेवा प्रभाग की कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. सविता दीदी ने कहा कि रक्त की कोई जाति, धर्म या सीमा नहीं होती और



सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया गया। रायपुर में कुल 709 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। रेडक्रॉस सोसाइटी के प्रभारी डॉ. प्रभु नारायण प्रधान ने रक्तदान को लेकर लोगों में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करते हुए कहा कि हरेक स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। इससे कोई कमजोरी नहीं आती। हमारा

रक्तदान के माध्यम से मानवता तथा विश्व बंधुत्व की भावना को मजबूत किया जा सकता है। कार्यक्रम में शुभ होस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. विवेक गोयल, इन्टीसिगड नर्सिंग कॉलेज की प्रशासनिक अधिकारी डॉ. भारती वैष्णव ने भी रक्तदान के महत्त्व पर अपने विचार रखे।

दादी प्रकाशमणि जी की स्मृतियां...

विश्व बंधुत्व के रूप में मनाई दादी की 19वीं पुण्य तिथि



अमृतसर-शांतिवन(राज.)। कुछ महान आत्माएं भले ही भौतिक रूप से हमारे बीच न हों, लेकिन उनके संस्कार, उनके आदर्श और उनका प्रेम युगों तक मानवता का मार्गदर्शक करते रहते हैं। ब्रह्माकुमारिज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के 19वें स्मृति दिवस के अवसर पर शांतिवन स्थित प्रकाश स्तंभ श्रद्धा, शांति और आध्यात्मिक भावनाओं का केंद्र बन गया। प्रातः काल से ही देश-विदेश से आए हजारों भाई-बहन एवं श्रद्धालुओं ने दादी जी के स्मृति स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके बताए प्रेम, सेवा, त्याग और राजयोग के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। दादी प्रकाशमणि जी को पूरे विश्व में स्नेहपूर्वक "विश्व की दादी" कहा जाता है।

राजयोगिनी मुन्नी दीदी ने कहा

दादी जी का प्रेम आज भी जीवित है संस्था को सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन स्वयं में एक चलता-फिरता विश्व विद्यालय था। उन्होंने हर आत्मा को प्रेम देना, सबको साथ लेकर चलना और परिस्थितियों में भी मुस्कुराना सिखाया। आज उनका भौतिक स्वरूप भले दिखाई नहीं देता, लेकिन उनका प्रेम और आशीर्वाद प्रत्येक ईश्वरीय संतान के संकल्पों में जीवित है।

आत्मविश्वास का संचार किया। विश्व के अनेक देशों में जाकर उन्होंने परमात्मा का शांति संदेश पहुँचाया तथा अनेक राष्ट्राध्यक्षों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने उनके आध्यात्मिक योगदान का सम्मान किया।

बालिका रमा से विश्व की प्रेरणा बनने तक की यात्रा सन् 1922 में अविभाजित भारत के सिंध प्रांत में जन्मी दादी जी का बचपन का नाम रमा था। मात्र 14 वर्ष की आयु में वे ओम मंडली (वर्तमान ब्रह्माकुमारिज) के संपर्क में आईं और 1936 में अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवा एवं मानव कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

18 जनवरी, 1969 को प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् उन्होंने संस्था की मुख्य प्रशासिका का दायित्व संभाला। अगले 38 वर्षों तक कुशल नेतृत्व में ब्रह्माकुमारिज ने विश्वव्यापी आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में नई ऊँचाइयों को प्राप्त किया। ब्रह्माकुमारिज के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय ने भी दादी के साथ के संस्मरण सुनाए।

प्यार सदा सुख देता है जबकि मोह दुःख का कारण बनता

77 पौधे लगकर मनाया 77वां जन्मदिवस...



प्रोफ़ाटो-मुठबाम(हरिवारा)। ब्रह्माकुमारिज संस्थान के ओम शांति रिट्रीट सेंटर के रजत जयंती वर्ष के अंतर्गत 'लव मीन्स टू गिव' अभियान का शुभारम्भ हुआ। ब्रह्माकुमारिज और कल्पतरु संस्थान की संयुक्त पहल के तहत आयोजित इस प्रकृति-प्रेम महा-संकल्प के दौरान कुल 77 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। अभियान की शुरुआत ओआरसी परिसर में आशा दीदी के 77वें जन्मदिवस पर 77 पौधे रोपकर की गई।

प्रेम का वास्तविक स्वरूप 'देना' है- राजयोगिनी ज्ञाना दीदी
ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्यार और मोह के अंतर को स्पष्ट किया। आशा दीदी ने कहा, "प्यार सदा सुख देता है, जबकि मोह दुःख का कारण बनता है। प्रेम हमेशा देना सिखाता है और इसका वास्तविक स्वरूप आत्मिक भाव में

है। 'गॉड इज लव' का यही संदेश है कि प्रेम में सुख, बलिदान और शुद्ध भावनाएं निहित हैं।"

अज्ञान और प्रकृति के मिलन से मिलेगी नई दिशा- 'ट्री मैन' विष्णु लांबा
'ट्री मैन' के नाम से विख्यात श्री कल्पतरु संस्थान के संस्थापक विष्णु लांबा ने इस समागम को ऐतिहासिक बताया। अब तक 1 करोड़, 60 लाख से अधिक पौधे लगा चुके लांबा ने कहा कि किसी को पौधा भेंट करने से बड़ी कोई सीमा नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता की सकारात्मक ऊर्जा से प्रकृति को नई संजीवनी मिलेगी।

खुशनुमा जीवन ही अमूल्य सफलता- डॉ. रूप सिंह : सिटी नर्सिंग होम भिवाड़ी के निदेशक डॉ. रूप सिंह ने कहा कि "खुशी से बड़ी कोई खुशक नहीं

है। आज समाज को केवल डॉक्टर या इंजीनियर बनाने की नहीं, बल्कि एक खुशनुमा जीवन के निर्माण की जरूरत है। प्रकृति के साथ सामंजस्य ही जीवन का मूलमंत्र है।" श्रीन लॉम्स कैपेन की ब्रांड एम्बेसडर उमा व्यास, एनआईआरसी ऑफ आईसीएआई के चेयरमैन सीए नव्या मल्लोत्रा, 'टाइगर प्रिंसेस ऑफ इंडिया' डॉ. लतिका नाथ और आदित्य बिड़ला समूह के डॉ. विनोद वर्मा ने भी अपने विचार रखे।
सांस्कृतिक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियां: गायक चांद बजाज ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया, जबकि कलाकारों ने नाट्य मंचन से प्रेम के भाव को जीवंत किया। ब्र.कु. पारुल ने ज्ञानवर्धक गतिविधियां कराईं। अतिथियों का अभिनंदन तिलक, बैन और पौधे भेंट कर किया गया। मंच संचालन ब्र.कु. योषु एवं ब्र.कु. प्रांजल ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।